International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(II), April- June, 2025, pp. 192-195

# मृदुला गर्ग की कहानियों की विषय वस्तु

**प्रेम लता***

सहायक आचार्य, भारतीय पी जी महिला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

*Corresponding Author: premlatachahar@gmail.com

**सार**

*मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य की एक प्रसिद्ध लेखिका हैं, जिनका जन्म सन 25 अक्टूबर 1938 को कोलकाता में हुआ था। उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और कुछ समय के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन भी किया। मृदुला गर्ग ने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध और व्यंग्य विधाओं में लेखन किया है। उनके लेखन में सामाजिक मुद्दों विशेष कर महिलाओं के मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है। उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है,जिनमें साहित्य अकादमी पुरस्कार और व्यास सम्मान शामिल है।*

***शब्दकोशः*** *हिंदी साहित्य, अर्थशास्त्र, नाटक, निबंध और व्यंग्य विधा।*

**प्रस्तावना**

मृदुला गर्ग ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन किया है। उनके कुछ प्रमुख उपन्यास है उसके हिस्से की धूप, वंशज, चित कोबरा, कठगुलाब इत्यादि। उनकी कहानी संग्रहों में कितनी कैदें, टुकड़ा टुकड़ा आदमी, डैफोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, मेरे देश की मिट्टी अहा इत्यादि हैं। 'रंग– ढंग' और 'चुकते नहीं सवाल' उनके निबंध संग्रह हैं। एक और अजनबी, जादू का कालीन, और कितनी कैदे उनके नाटक हैं।

मृदुला गर्ग को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें शामिल है :

- साहित्य सम्मान (हिंदी अकादमी दिल्ली, 1988)।
- साहित्य भूषण (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ 1999)
- व्यास सम्मान (2004) 4 साहित्य अकादमी पुरस्कार (2013)
- राम मनोहर लोहिया सम्मान (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ 2016)।

मृदुला गर्ग एक प्रसिद्ध और प्रभावशाली लेखिका हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। "टुकड़ा टुकड़ा आदमी" कहानी संग्रह की कहानियों में नारी के मानसिक संत्रास, असफल वैवाहिक जीवन, आर्थिक शोषण आदि समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई हैद्य इस कहानी संग्रह में कुल 14 कहानियों का संग्रह है। "टुकड़ा टुकड़ा आदमी" कहानी संग्रह में "दो फूल" की शांतमा "अवकाश" की "वह" की निशि आदि प्रमुख नारी पात्र है। पुरुष पात्रों में "टुकड़ा टुकड़ा आदमी" का सुबोध, उसकी तरह का सुमित आदि प्रधान पुरुष पात्रों के अलावा गोंण पुरुष पात्र भी है। अवकाश कहानी की नायिका "वह" महेश की पत्नी एवं दो बच्चों की मां होते हुए भी समीर से प्रेम करती है जिससे उसके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न हो जाता है। अंत में वह पति से तलाक लेने का निर्णय कर समीर के पास चली जाना चाहती है। "रुकावट" कहानी की प्रमुख स्त्री पात्र "रीता" है, कहानी में रीता के सेक्स की भूख को खुलेपन से चित्रित किया गया है। रीता पति के अलावा प्रेमी मदन से शारीरिक संबंध स्थापित करती हैद्य मदन के चरित्रहीनता को जानकर भी रीता शारीरिक आकर्षण के चलते मदन को भूल नहीं पाती है। "यह मैं हूं" कहानी की सरल कालरा को अपने सौंदर्य पर गर्व था किंतु एक

चित्रकार द्वारा बनाई गई अपनी तस्वीर को देख अपने अभावपूर्ण वास्तविक स्थिति का ज्ञान हो जाता है। "टुकड़ा टुकड़ा आदमी" कहानी का नायक सुबोध कुमार बेलापुर सीमेंट कंपनी का अध्यक्ष हैद्य वह बेलापुर सीमेंट कंपनी के मजदूरों की दयनीय स्थिति को देख उनके लिए मकान बनवाने का ऐलान करता है किंतु उन्हें गरीब मजदूरों के लिजलिजे स्पर्श से घृणा भी करता है। अपनी रखेल को हीरे का हार देकर खुश करने के लिए मजदूरों के लिए पक्के मकान बनाने की योजना को रुकवा देता है। यहां सुबोध कुमार के दिखावटी व्यवहार का पता चलता है। इस प्रकार "टुकड़ा टुकड़ा आदमी" कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों के पात्रों के माध्यम से उनकी समस्याओं उनकी दयनीय स्थिति ,पति–पत्नी के संबंधों में तनाव आदि का चित्रण हुआ है। "अवकाश" कहानी की नायिका के संवाद के माध्यम से उसकी मानसिकता का चित्रण हुआ है। पति को प्रेमी के विषय में बता रही वह सोचती है कि महेश कहीं उसकी बातों से दुखी ना हो जाए। तब वह कहती हैः–

("महेश मैं तुम्हें प्यार किया है, अब भी करती हूं। इसीलिए 2 वर्ष से अपने को रोकते रही हूं, अपने से लड़ती रही हूं")।

इसी प्रकार "रुकावट" कहानी में रीता के संवाद के माध्यम से उसकी मानसिक छटपटाहट का चित्रण हुआ है। "लिली ऑफ़ द वैली" कहानी की नायिका निशि के दांपत्य संबंध में आए घुटन को संवादों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। निशि रहती हैः–

("तुम्हें आने को मना किया था, फिर क्यों आए ? "क्यों"? पुरुष स्वर कुछ अस्पष्ट, कम्पित सा था "इज्जत में कमी आ गई")

यही 'दो एक फूल' कहानी में शान्तमा के संवाद पति द्वारा सुनाए गए तानों से शान्तमा की आंतरिक पीड़ा का चित्रण हुआ है। मलती द्वारा सांत्वना से पहले दो बच्चों के न रहने का कारण पूछे जाने पर शान्तमा कहती है

"मेरा मरद बोलता है, तेरे कर्म खराब है जो बच्चा नहीं रहता। तेरा पाप फलता है उसके बदन पर शान्तमा उस दिन को याद करके जोर से रो दी।"

टुकड़ा टुकड़ा आदमी कहानी संग्रह की अधिकतर कहानियों का परिवेश आधुनिक है। इन कहानियों में दो पीढीयों का संघर्ष, दांपत्य संबंधों में तनाव आदि को दर्शाया गया है। 'रुकावट, एवं 'अवकाश' कहानी का परिवेश आधुनिक है। दोनों ही कहानियों की नायिकाएं विवाहित होते हुए भी पर–पुरुष से संबंध स्थापित करती है। यह भाव आधुनिक युग के परिवेश को परिलक्षित करता है। 'लिली ऑफ द वैली' कहानी में निशि के तनावपूर्ण जीवन का वर्णन है। 'उसकी कराह' कहानी में पति की अतिव्यस्तता से उसकी पत्नी उपेक्षित महसूस करती है। पैसों के पीछे भाग कर सुमित अपने वैवाहिक जीवन का नाश करता है।

इस संग्रह की अन्य कहानियां वर्तमान युग के अनेक सत्यों को लेकर उपस्थित हुई है। इस कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों में पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, संक्षिप्त एवं सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। 'टुकड़ा टुकड़ा आदमी' कहानी के देहाती पात्र बलिया और रामदीन की भाषा में यह देहातीपना देखा जा सकता है। "यह मूई बरखा को भी अभी आना था छि किसान हो बरखा को गाली दो हो"।

"मौत में मदद" कहानी में बंगाली भाषा का सुंदर प्रयोग किया गया है। बेटे की बीमारी से परेशान बुदन की बेचौनी उसकी भाषा में प्रकट होती है।' टुकड़ा टुकड़ा आदमी' कहानी संग्रह में अलंकारिक भाषा के सुंदर उदाहरण दृष्टव्य है। (उसकी साड़ी इतनी महीन, जैसे हवा में उड़ता वर्षा ऋतु का पहला बादल)। यहां महीन साड़ी को वर्षा ऋतु के प्रथम बदल के साथ जोड़ा गया है। आत्मकथात्मक, विश्लेषणात्मक और संवाद आदि भिन्न भिन्न शैलियों का प्रयोग इस संग्रह की कहानियों में किया गया है। इस प्रकार टुकड़ा टुकड़ा आदमी कहानी संग्रह में नारी मन की पीड़ा, अस्वस्थ दांपत्य जीवन, सेक्स भावना की अधिकता आदि विषयों को लेकर कहानियों की रचना की गई है।

'मेरे देश की मिट्टी अहा' कहानी संग्रह में संग्रहित कहानी अलग–अलग विषयों पर लिखी गई है। इस कहानी संग्रह में कुल ग्यारस कहानियां संग्रहित है। मेरे 'देश की मिट्टी अहा' कहानी एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने गांव तथा समाज में सदियों से चली आ रही परंपरा का विद्रोह करती है। 'लल्ली' खेड़ी गांव में अपनी दादी के साथ रहती है। उसकी दादी अपना और अपनी पोती का भरण पोषण करने के लिए मिट्टी के खिलौने बेचा करती है। दादी की मृत्यु के पश्चात लल्ली के एक दूर के रिश्तेदार उसे अपने साथ गुड़गांव ले जाते हैं तथा उसका एक स्कूल में दाखिला करवा देते हैं। जिस वर्ष लल्ली 12वीं पास करती है' उसी वर्ष उसके ताऊ की ब्याहता बेटी का देहांत हो जाता है। बेटी के बच्चों को सौतेली मां के सहारे न रहना पड़े इसलिए वह बेटी की तेरहवीं होने के उपरांत ही लल्ली का विवाह 45 वर्षीय अपने दामाद से तय कर देते हैं।

लल्ली का भावी पति हवलदार था। गुड़गांव में तबादला होते ही जीजा ससुराल में रहने लगा और लल्ली के सामने मुजरिमों की पिटाई आदि बातें किया करता जिसे सुन लल्ली बेहोश हो जाया करती थी। इसकी फ़िक्र किसी को न थी। जीजा के खौफ से लल्ली एक मुसलमान लड़के के साथ भाग कर विवाह कर लेती है। पति के साथ अपने ससुराल खेड़ी गांव आती है और पति की पहली बीवी की मृत्यु के बाद सास ससुर के साथ गांव में रहने लगती है

'किस्सा आज का' कहानी का नवधनिक या उच्च मध्यम वर्गीय स्त्री के अति सुख साधन की मांग तथा बेलगाम इच्छाओं की कहानी है। 'किस्सा आज का' वकीलन से पूर्व एक सफल वकील हुआ करती थी, किंतु शादी के बाद नौकरी छोड़कर घर की नौकरी में लग जाती है। बिना कुछ काम किया ही थकी थकी सी रहती है और हर काम में बड़ी मुश्किल है का रटन करती रहती है। वकीलन की मालिश वाली अंगूरी उसकी हर मुश्किल को जानती है। वकीलन को बड़े घर के सजावट की, मेहमानों के आदर आदि की अनेक तकलीफें हैं जिन्हें अंगूरी बखूबी जानती हैं। वकीलन के लिए पूरे समय की दासी की जरूरत को पूरा करने के लिए अंगूरी रामकली को रख लेती है। ₹600 महावर, दो समय का खाना, कपड़ा आदि की भी व्यवस्था रामकली के लिए हो जाती है। दिन रात के काम से रामकली मानव से मशीन बन जाती है और इन सबसे तंग आकर एक दिन वह घर से पैसे चुराकर भाग जाती है।

'छलावा' कहानी नामचीन वैद्य और हीरे के शौकीन राजा की कहानी है। राजा हमेशा हीरे एकत्रित करने में लीन रहता है। राजा के बीमार पड़ने पर राजवैद्य हीरे की अंगूठी जलाकर उसकी भस्म को 10 हिस्सों में बांट देता है और राजा से दूध के साथ सेवन करने के लिए कहता है। अमावस्या की एक रात वैद्य जी के जीवन में बड़ा भूचाल आ जाता है। धूप का बगुला वैद्य जी के दरवाजे पर खड़ा हो अपने बेटे के इलाज के बदले पांच हीरे इनाम के रूप में देता है और अंतरध्यान हो जाता है। वैद्यराज राज के चार हीरे राजा एक–एक करके हथिया लेता है और पांचवा भी हथियाना के फिराक में रहता है। इन हीरो का राज पता चलने पर राजा अपने तमाम सैनिकों और वैद्य के साथ निकल पड़ता है। राजा अपनी जिम्मेदारियां से विमुख रहता है तथा अपने सुख के आगे वह जनता के सुख की परवाह नहीं करता।

'जीरो अक्स' कहानी एक स्त्री की ललकार पुरुष के अहम् को किस प्रकार चूर–चूर कर देती है तथा इस टूटे हुए अहंकार का बदला पुरुष किस प्रकार लेता है। यह इस कहानी के कथ्य के माध्यम से सामने आता है। साजन भाई एक लेखक और संपादक के रूप में मशहूर है। वह मेधा के पूछे गए प्रश्नों के इस तरह क्रोधित होते हैं कि मेधा का गला दबाकर उसे मार डालते हैं। मैदा का गला दबा देने पर भी अहंकारी, स्त्री विरोधी साजन भाई को न कोर्ट कचहरी का डर था न समाज का। इस कहानी के द्वारा साजन भाई के अहंकार, प्रदर्शन प्रियता स्त्रियों के प्रति निम्न विचार, आदि का पर्दाफाश किया गया है।

'साठ साल की औरत' कहानी नारी में साठ की उम्र में भी प्रणव भाव की उपस्थिति को दर्शाती है। इस कहानी की नायिका सुरभि घोष के मन में डॉक्टर चंद के प्रति आकर्षण और प्रेम उत्पन्न होता है। वास्तव में प्रेम की कोई उम्र नहीं होती। वह किसी भी उम्र में हो सकता है। यही इस कहानी में बताया गया है। साठ की होने पर भी औरत की इच्छाएं और महत्वाकांक्षाएं वही रहती है।

'इक्कीसवीं साड़ी का पेड़' कहानी के द्वारा बताया गया है कि एक पेड़ किस प्रकार अन्य पेड़ों से अलग होता चला जाता है और धीरे–धीरे उसका अस्तित्व ही खत्म होने की कगार पर आ जाता है। इस कहानी में बताया गया है कि किस प्रकार पेड़ पौधों के काटने से पर्यावरण को हानि हो रही है। पशु पक्षियों का देश–विदेश की बातें सुना कर 21वीं साड़ी का पेड़ अपना जीवन व्यतीत करता था किंतु अब पेड़ों की जरूरत न होने की बात सुनकर वह दुखी होता है। जिस सुबह वह पेड़ अपने प्राण हवा में त्यागने की सोचता है तभी उसे पेड़ लगाओ– पर्यावरण बचाओ का नारा सुनाई देता है और पेड़ पहली बार खुलकर हंस पड़ता है। वर्तमान समय में मनुष्य भी पेड़ की भांति ही अकेलेपन का शिकार होता चला जाता है।

**निष्कर्ष**

'मेरे देश की मिट्टी अहा' कहानी संग्रह की कहानियां कथ्य की दृष्टि से विविधता से परिपूर्ण है। भिन्न–भिन्न प्रकृति के पात्रों द्वारा उनके मनरू स्थिति एवं उनकी समस्याओं का चित्रण किया गया है। 'मेरे देश की मिट्टी अहा' कहानी की लल्ली एक निडर तथा स्वतंत्र विचारों वाली पात्र है। 'जहां किस्सा आज का' कहानी की वकील एक आलसी नारी है वहीं दूसरी ओर 'सात कोटरी की बहनें' नारी के बलिदानी चरित्र को उद्घाटित करती है। 'छलावा' कहानी का राजा एक लोभी, गैर जिम्मेदार व अपने ही सुख में लीन रहने वाला अक्रमण्य नायक है। 'जीरो अक्स' का साजन अहंकारी एवं स्त्रियों के प्रति निम्न विचार रखने वाला व्यक्ति है। पात्रों के संवाद उनके जीवन में घटित घटनाओं को उजागर करने में सफल हुए हैं। इन कहानियों में अंध श्रद्धा, उच्च व मध्यवर्ती स्त्रियों की बेलगाम इच्छाएं, दहेज प्रथा के कारण स्त्रियों के त्रासद जीवन आदि का चित्रण हुआ है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. कहानी टुकड़ा टुकड़ा, 1977, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. मेरे देश की मिट्टी, 2001, किताब घर प्रकाशन।
3. ग्लेशियर से, 1980, प्रभात प्रकाशन।

❖◆❖